પ્રસ્તાવના.

આપણા જૈનોના કેટલાક ત્હેવારો એવા પણ છે કે જે હાલ સાર્વજનિક ત્હેવાર તરીકે સર્વત્ર પ્રસિદ્ધ છે. એવો એક ત્હેવાર રક્ષાબંધનનો દિવસ એટલે બળેવ પણ છે. આ ત્હેવારની શરૂઆત કેવી રીતે થયેલી, તેની કથા મુંશી નાથુરામ લમેચુએ પ્રાચીન શાસ્ત્ર ઉપરથી હિંદી કવિતામાં રચીને પ્રકટ કરી હતી, તેનો ગુજરાતી અનુવાદ અમે ચાર વર્ષ ઉપર ('દિગંબર જૈન'ના બીજા વર્ષના ૧૦મા અંકમાં) પ્રકટ કર્યો હતો, જે પુસ્તકરૂપે પ્રકટ થવાની આવશ્યકતા હોવાથી આ "રક્ષાબંધન કથા" નામે પુસ્તક પ્રકટ કરવામાં આવે છે. એમાં આ કથાની સાથે એ દિવસે કરવાની શ્રી અકંપનાચાર્યાદિ ૭૦૦ મુનિની અને વિષ્ણુકુમાર મહામુનિની પૂજા (સલૂના પૂજન) જે પં. બાબુલાલ જૈની (નગલેસરૂપ)એ રચીને પ્રકટ કરેલ છે, તે પણ આ સાથે સામેલ કરેલી છે, જેથી બળેવના ત્હેવારને દિવસે આ કથા વાંચવાને અને સલૂનાપૂજન કરવાને આ પુસ્તક સર્વને અતિ ઉપયોગી થઇ પડશે. વળી સર્વે વાંચકોને સહેલાઇથી મળી શકે તે માટે, આ પુસ્તક "દિગંબર જૈન" પત્રની છઠ્ઠા વર્ષની ૯મી ભેટ તરીકે ધરણગામ નિવાસી શેઠ ચુનીલાલ અંબુસા ગાંધીના પ્રયાસથી માલેગામ (નાસિક) નિવાસી શા. મોતીલાલ ઝુમકલાલની સ્વર્ગવાસી સૌ. પત્નિ સૂરજબાઇના સ્મરણાર્થે પ્રકટ કરવામાં આવે છે, જે 'દિગંબર જૈન'ના ગ્રાહકોને એક ઉપયોગી વાંચન પૂરું પાડશેજ, એમ અમોને છે.

સંવત ૨૪૩૯ વદ ૧૨ —૧૩ } જૈન જાતિ સેવક મુલચંદ કસનદાસ કાપડીઆ-સુરત

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

रक्षाबंधन कथा.

मगध देशमां राजग्रह नामनुं नगर हतुं, तेमां श्रेणिक राजा चेलणा राणी साथे राज्य करता हता, त्यारे एक वखते ते शेहेरनी पासे पंचगीरी पहाड उपर महावीरस्वामीनुं समोसर्ण आव्युं हतुं, ते वखते माळी फळफुल लइने वधामर्णी कहेवाने राजा पासे आव्यो. राजा ए वात सांभळीने अत्यंत आनंद थया अने नगरना सर्व लोकोने साथे लइने महावीरस्वामीना दर्शन करवा गया अने त्यां जइने भक्तिथी वंदना कर्या पछी गौतम गणधरने नमस्कार करीने सभामां बेठा अने प्रश्न कर्यो के—हे प्रभु, मने रक्षावंधननी कथा (सळनोत्पत्तिनी कथा) कहो के केवी रीते वळी राजा छळायो अने रक्षावंधननो तहेवार चालु थयो. आथी गौतम गणधरे नीचे प्रमाणे रक्षावंधननी कथा राजाने संभळावी:—

कुरुजांगल देशमां हस्तिनापुर नामनुं नगर हतुं, जेमां महापद्म राजा लक्ष्मीवती राणीनी साथे राज्य करता हता, तेमने पद्मराय अने विष्णुकुमार नामे बे पुत्रो हता. वखत जतां राजा

वैराग्य उत्पन्न थवाथी राज्यभार पद्मराय पुत्रने सोंपीने वनमां जइने दिक्षा लइने तप करवा लाग्या अने नाना पुत्र विष्णुकुमारे पण राजानी साथे दिक्षा लइ लीधी.

हवे माळवाना उज्जन नगरमां श्रीवर्मा नामे राजा श्रीमती राणी साथे राज्य करता हता, तेमने ब्राह्मणधर्मने पाळवावाळा बळी, नमुची, बृहस्पति अने प्रह्लाद नामे चार प्रधानो (मंत्री) हता. हवे ए नगरमां ७०० शिष्यो साथे एक जैन मुनि विहार करतां आव्यां अने शहेर पासे वनमां उतर्या. मुनिने खबर पडी के अत्रेना राजाना चारे मंत्रिओ मिथ्यात्वी छे तथा वैभव अने विद्यानां गर्ववाळा छे, आथी तेमणे सर्वे शिष्योने बोलावीने कह्युं के—राजाना मंत्रीओ ज्यारे अत्रे आवे, त्यारे कंइ पण बोलशो नहि अने मौन रहेजो, केमके दुष्टी साथे वात अथवा विवाद करवाथी नकामो उत्पात उत्पन्न थाय. ज्यां राजाने खोटी संगति होय छे, त्यां नक्की उपद्रव थाय छे; माटे सर्वे मौनव्रत लेजो. शिष्योए गुरुनी आ आज्ञा स्विकारी.

हवे एक श्रुतकीर्ति नामे शिष्य जे आहार माटे नगरमां गया हता, तेमणे आ मौन रहेवानी आज्ञा सांभळी नहि, आथी शुं बन्युं ते जुओ.

ते वनमां मुनि पधार्या छे, एम लोकोना सांभळवामां आव्याथी सर्वे लोको मुनिनी वंदना करवाने टोळेटोळां जवा लाग्यां, जे जोइने राजाए मंत्रिओने पुछ्युं के—आज शुं मोटो पर्व (तहेवार)

छे के सर्वे प्रजा हर्षघेली थइने टोळेटोळां आवजाव करे छे ? मंत्रिओए जवाब आप्यो के—हे राजा, वनमां जैनोना दिगंबरी (नग्न) मुनि आवेला छे, जेने वांदवाने सर्वे लोको जाय छे. राजाए कह्युं—"हुं पण मुनिना दर्शन करवा जाउं अने जोउं के ते शुं करे छे ! ?" मंत्रिओए कह्युं के ए दर्शन करवा योग्य नथी, त्यारे राजाए कह्युं के जइने मात्र जोवाथी शुं पाप लागवानुं छे ? 'अमृत जोवाथी अमर थवातुं नथी अने विष जोवाथी मरी जवातुं नथी', माटे हुं तो दर्शन माटे जइश. तमारे आववानी इच्छा न होय, तो आवशो नहि.

ए पछी राजाए चालवा मांड्युं, त्यारे मंत्रिओए पण विचार्युं के जो साथे जइशुं नहि, तो राजाने खोटुं लागशे, एम विचार करीने चारे मंत्रिओ राजानी साथे मुनिनां दर्शन करवाने गया. राजाने आवता जोइने सर्वे मुनिओ ध्यानारुढ थइ गया. राजाए सर्वे मुनिओने नाशिका (नाक) ना अग्रभाग उपर दृष्टि राखीने ध्यानमां निमग्न थएला जोया. राजाए सर्वेने नमस्कार करीने चालवा मांड्युं, त्यारे मंत्रिओए राजाने कह्युं के जुओ, मुनिओ केवा पथ्थरना थांबला जेवा बेसी रह्या छे ! कोइ बोलतुंज नथी, तेनुं कारण एज छे के तेओ कंइ विद्या जाणता नथी. हे राजा, विद्या वगरनो मनुष्य पशु समान छे. आ प्रमाणे वारंवार राजाने कहेवा मांड्युं अने सर्वे चालवा मांड्या, एटले एक श्रुतकीर्ति नामना मुनि जे आहार माटे नगरमां गया हता,

अने जेमणे मौन रहेवा-संबंधीनी हकीकत सांभळी नहोती, ते राजाने सामे आवता मळ्या.

मुनि ज्यारे पासे आव्या त्यारे मंत्रिओए मुनिनी मश्करी करतां राजाने कह्युं के-जुओ केवा मोटा! "तक्रपीत युग कुक्ष भंत" एटले छास पीने पेट भरवावाळा एवा मोटा धुरंधर साधु आव्या छे. आ प्रमाणे मुनिनी केटलीक निंदा करी, एटले मुनिए कह्युं के-'तक्रपीत' तमे क्यां जुओ छो? पीत (पीळुं) तो गायनुं मूत्र होय छे के जेने तमो रोज हर्षथी पीओ छो. तमे तक्र (छास) अने मूत्रनो भेद जाणता नथी, तेथीज तक्रपीत एम कहो छो. हे राजा, तमारा मंत्रीओने एक वात पुछुं छुं, ते सांभळो. ब्राह्मणो कहे छे के गाययोनिमां ३३ करोड देवता रहे छे, त्यारे गायने ज वखते बळद भोगवे छे ते वखते ते देवताओ क्यां जाय छे? अथवा ज्यारे गाय वीर्यनुं पान करे छे त्यारे अंदर रहेला देवता तेने शुं अमृत समान जाणे छे? ज्यारे ब्राह्मणो गायने माता कहे छे के जे वात आखा जगतमां विख्यात छे, त्यारे तेओ बळदने बाप केम कहेता नथी? हे राजा, आनो न्याय तमे करो. वारंवार ज्यारे राजाए मंत्रीओने आनो जवाब आपवाने कह्युं त्यारे मंत्रीओ लजवाइ गया अने कंइ जवाब न आपतां चालवा मांड्युं.

ए पछी मुनि पण वनमां चाल्या गया अने चारे मंत्रीओ पण शेहेरमां गया. हवे श्रुतकीर्ति मुनिए जइने बनेली सर्व हकी-

कत गुरुने कही, त्यारे तेमणे कह्युं के दुष्टोनी साथे वात करी, ए तमे घणुं खोटुं कर्युं छे. हवे तेओ आपणा उपर नक्की द्वेष करशे अने आज रात्रे उपसर्ग करशे, माटे प्रमाद छोडीने जे ठेकाणे वाद थयो छे, त्यां जइने ध्यान धरीने बेसो. गुरुनो आ प्रमाणे उपदेश सांभळी श्रुतकीर्ति मुनि तेज ठेकाणे जइने ध्यान धरीने बेठा. हवे रात्रे पेला मंत्रीओ कोपथी वैर लेवाने माटे आव्या. मुनिने ध्यानमां बेठेला जोइने अभिमाननां वचनो बोलवां मंड्यां अने बोल्या के एणे आपणुं अपमान कर्युं छे, माटे एनो प्राण लइए. बीजाओए तो आपणने कंइ कहुंज नथी, माटे तेने मारवानी जरुर नथी, एम चारेए विचार करी जेवा ते मुनिने तलवार लइने मारवा तैयार थाय छे, तेटलामांज वनरक्षक-देवीए आवीने तेमना हाथपग सजड करी दीधां. एटले तेमनाथी कंइ थइ शक्युं नहि अने तरवार उगामतांज स्थिर उभा रही गया.

सवारे राजाए ज्यारे आ वात सांभळी, त्यारे त्यां तेओ जोवा माटे आव्या अने मुनिनी अत्यंत प्रशंसा करी अने मंत्रीओनी घणी निंदा करी तेमने धिक्कार आप्यो. नगरना लोको पण मुनिनी प्रशंसा करवा लाग्या, एटलामां देवे प्रगट थइने कह्युं के—" आ ब्राह्मणो घातकी छे. एओ मुनिनी हत्या करवाने आव्या हता, तेथी में एमने जड करी दीधा छे." राजा क्रोध करी बोल्या के-

"हवे एने शुळीए चढाववा जोइए, जेथी कोई पण आवुं काम फरीने करे नहि." आ सांभळी मुनिए कह्युं के एने तमो शुळीए चढावशो नहि; एने तमारी मरजी होय तो कंई बीजीज शिक्षा करजो. ए पछी देवे ब्राह्मणोने छुटा कर्या अने राजाए चार गधेडा मंगावीने तेना उपर चारे मंत्रीओने बेसाडी तेमनुं मोढुं काळुं करी आखा गाममां फेरव्या, जे वखते तेनी पाछळ ढोल वगडावी अने सर्वेने कह्युं के-जे कोई आवुं काम करशे, तेने आवीज शिक्षा थशे. आ प्रमाणे करी राजाए चारे मंत्रीओने पछी देशपार करी दीधा.

हवे चारे ब्राह्मणो भटकता भटकता अनेक देशोमां फरवा लाग्या अने आखरे गजपुर (कुरुजांगल) देशमां पहोंच्या, ज्यां पद्मराय नामे राजा राज्य करता हता. तेओए राजाने आशीर्वाद आप्यो, त्यारे राजाए कह्युं के—तमो क्यां रहो छो अने अहिं केम आव्या छो ? ब्राह्मणोए कह्युं के—अमे उज्जनना वासी छीए अने नोकरीनी तलासने माटे अत्रे आव्या छीए, माटे जो अमारा लायक नोकरी होय, ते अमोने आपशो तो कृपा थशे.

राजाए बळीने मंत्रिनुं पद आप्युं अने बीजा त्रणने पण बीजी योग्य नोकरीओ आपी. आ प्रमाणे आ चार ब्राह्मणो आ राजाने त्यां रहेवा लाग्या. ए पछी राजाने दरेक वखत विचारमां पडेला जोईने ते चारेए पुछ्युं के—आप शुं विचारमां छो अने आवा दुर्बळ केम थया छो ? जे कंई काम होय ते कहो. दुनियामां एवुं एक पण कार्य नथी के जे अमाराथी थई शके नहि !

राजा मनमां संकोचाईने बोल्या—"अमारा पिता चक्रवर्ति हता अने तेमने ताबे सर्वे राजाओ हता. अमारा पिताए दिक्षा लीधा पछी अमे राजा थया छीए. हाल कुंभपुर नगरमां सिंहबळ नामनो एक राजा छे ते प्रथम अमारे ताबे हतो, पण हाल ते अमारे ताबे रहेतो नथी अने तेनुं सैन्य घणुं मोटुं छे. ते राजा माराथी जीती शकातो नथी, तेथी हुं घणो दुखी छुं अने मारुं शरीर दुर्बळ थवानुं पण एज कारण छे."

आ सांभळी बळीए कह्युं—"हे राजा, जो तमे थोडुं लश्कर मने आपो, तो हुं ए राजाने अत्रे पकडी लावुं."

त्यारे राजाए बळीने थोडुं लश्कर आपीने मोकल्यो. बळी बीजा त्रणे प्रधानोने साथे लईने केटलेक दिवसे ते राजा पासे पहोंच्यो अने ते राजानी सभामां कपट करवाने माटे हर्षित थईने गयो अने राजाने आशीर्वाद आप्यो के—धन्य छे तमारा जेवा राजाने! "तमे कोटी वर्ष जीवो" एवो अमे आशीर्वाद आपीए छीए. आथी राजाए बळीने घणो आवकार आप्यो, एटले बळीए कह्युं के—हे राजा, मारे आपने एक खानगी वात करवानी छे. पण ते बधाना देखता कहेवाय तेवी नथी. आप जो एकांतमां आवो, तो ते वात कहुं. तेथी सरस जो अमारे मुकामे आप पधारो, तो घणुंज सारुं थाय. राजाए आ वातनी हा कही अने बळी, राजाने पोताने मुकामे तेडी गयो अने बारणामां पेसतांज राजाने मजबुत बांधी लीधा अने पछी गुप्त रीते पोताना शहेरनां

पद्मरथ राजा पासे लई गयो अने कह्युं के—जो तमारे छुटवुं होय, तो पद्मरथने तावे थाओ, नहि तो तमारी प्रतिष्ठा घटशे. आथी राजाए पद्मरथने तावे रहेवानुं कबुल कर्युं. ए पछी पद्मरथ राजाए सिंहबळनो घणो सत्कार करीने तेमने विदाय कर्या.

हवे पद्मरथ राजा बळि उपर बहुज प्रसन्न थया अने तेने कह्युं—"तुं जे मागे, ते हुं तने आपवा तैयार छुं." बळीए जवाब आप्यो के—आपनुं वरदान हाल रहेवा दो. मारी ध्यान पहोंचशे, त्यारे हुं जे जोइशे ते आपनी पासेथी मांगीश. राजाए पण आ वात कबुल करी. हवे थोडी वखत गया पछी ए शहेरमां आगळ कही गयेला जैन मुनि तेज ७०० शिष्यो साथे वनमां पधार्या. बळीए विचार कर्यो के राजा जैनी छे, माटे में आ मुनिने आगळ जे उपसर्ग करेलो छे, ते वात राजाने काने जशे, तो मारी अपकीर्ति थशे अने अत्रेथी काढी मुकशे, माटे आपेलुं वरदान आ वखत काम लगाडुं, तो ठीक थाय, एम विचारी राजा पासे जइ प्रणाम करीने कहेलुं वरदान मांग्युं. राजाए कह्युं के—जे मांगो, ते आपवा तैयार छुं. बळीए कह्युं के-हे राजा, मने मात्र सात दिवसने माटे राज्य आपो. राजाए ए मांगणी कबुल करी सात दिवस माटे बळीने राजा बनाव्यो.

हवे जे ठेकाणे मुनि पधार्या हता, त्यां बळीए वच्चोवच्च मोटी धुणी सळगावी अने मुनिओनी आसपास झाडी रोपीने तेओने घेरी लीधा, त्यां नरमेध नामनो यज्ञ मुनिनो नाश कर-

वाने माटे रच्यो अने ते यज्ञमां हाडकां, चामडां, वाळ, वगेर होमी धुणी करी. हाडकां चामडां सळगवाथी त्यां अत्यंत दुर्गंध व्यापी रही. ए पछी तेमां जीवडांओ हामवा मांड्या. आथी मुनिओने घणो उपसर्ग थयो अने तेमणे विचार्युं के जो आ विघ्न टळे, तोज आहार लेवो, नहितो अमारे सर्वस्वनो त्याग छे. नगरना लोको सर्वे जोवा मळ्या, तेमनाथी मुनिने थतो उपसर्ग सहन थइ शक्यो नहि तेथी तेओए विचार कर्यो के बळी बहादुर छे अने एणे मुनिनो नाश करवानो उद्यम कर्यो छे अने तेथी नरमेध नामनो यज्ञ कर्यो छे. कह्युं छे के:—

मेघही वरसे तृण भरे, वाडी खेतर खाय।
भूप करे अन्याय तो, न्याय कौनपर जाय॥

अर्थः—वरसाद वरसवाथी घास बळी जतुं होय, अने वाड खेतर खाइ जती होय, तेम जो राजाज अन्याय करे, तो तेनी फर्याद कोनी पासे थइ शके?

हवे सर्वे नगरना लोको पण आ जोइने खानपाननो त्याग करीने बेठा अने कहेवा लाग्या के जो मुनिनो उपसर्ग टळे, तोज खावुं, नहि तो अनशन करीने मरी जवुं. ए पछी यज्ञमांथी दुर्गंधी धुमाडो एटलो वधो थयो के जेथी आकाश पण काळुं थवा लाग्युं अने मुनिना नाकमां अत्यंत दुर्गंध जवाथी तेमने घणुं दुःख थयुं.

हवे अर्धरात्रि व्यतित थइ, ते वखते मिथिलापुर नामना नगरना वनमां सारचंद्र नामना मुनि तप करता हता, तेमणे श्रवण नक्षत्रनो तारो एकदम कंपायमान थतो जोइ अवधिज्ञानथी जाण्युं के कोइ मुनिने महान उपसर्ग थएलो छे, एथी हा, हा, कष्ट! !एम मुखथी बोल्या, ते बीजा शिष्योए सांभळ्युं; तेमां पुष्पदंत नामना मुनिए पुछ्युं के-हे गुरु, कोने क्यां आगळ कष्ट आव्युं छे? मुनिए अवधि जोडीनें कह्युं के--गजपुर नगरना वननी मध्यमां नीच बळीए नरमेघ नामे यज्ञनो आरंभ करीने मुनिओने उपसर्ग करवा मांडयो छे. त्यां अंकपन गुरु साथे ७०० शिष्यो छे, तेमने घेरी लईने वचमां यज्ञमां हाडकां चामडां वगेरे अशुद्ध पदार्थो बाळी रह्यो छे. जेनी दुर्गंधथी मुनिओने महान उपसर्ग थयो छे.

पुष्पदंत मुनिए कह्युं--"हे गुरु, ए उपसर्ग दुर करवानो कंई उपाय होय, तो बतावो. अमे ते प्रमाणे करवा तैयार छीए. गुरुए कह्युं के धरनिभूषण गीरी उपर विष्णुकुमार नामना मुनि तप करे छे, तेमने विक्रियारुद्धि (गमे तेटलुं मोटुं शरीर करवानी शक्ति) उपजी छे, तेथी तेओ आ उपसर्ग दुर करी शकशे, माटे तमे एमनी पासे जईने सर्व वृतांत कहो. आथी ते मुनि आकाशमार्गे विष्णुकुमार पासे आव्या अने प्रणाम करीने बेसीने सर्व हकिकत कही संभळावी अने कह्युं के--"आपने विक्रियारुद्धि उपजी छे, माटे आप ए उपसर्गने दुर करो. आप

वात्सल्य गुणनाधारी छो, माटे जीन पंथनो प्रताप प्रकट करीने कोई पण रीते मुनिओने उपसर्गमांथी बचावो. "

ए पछी विष्णुकुमार मुनि विक्रियारुद्धि (-शरीर मोटुं करवानी विद्या) ना बळवडे करीने गजपुर नगरमां पहोंच्या अने प्रथम पद्मरथ राजा पासे तेमना महेलमां गया अने कह्युं– " कुरुवंशमां तुं केवो मूर्ख उत्पन्न थयो छे के जे वंशमां दानेश्वरी राजा श्रेयांस उत्पन्न थया, त्रण तीर्थंकरो नामे शांति, कुंथुं अने अरनाथ उत्पन्न थया, अने अमारा पिता चक्रवर्ति थया के जेमणे तने राज्य आप्युं छे, ते कुळमां तुं आवो शुळ (मूर्ख) केम उत्पन्न थयो के मुनिनो घात करवानुं पातक लेवाने तैयार थयो छे ? "

पद्मरथे हाथ जोडीने कह्युं–" हे गुरु, में मुनिने उपसर्ग कर्यो नथी, तेमज तेम करवाने माटे उपदेश पण आप्यो नथी. आ सर्वे कार्य दुष्ट बळीए करेलुं छे, जेनी हकीकत कहुं छुं ते सांभळो. हरीबळ राजा मारे तावे रह्यो नहीं, तेथी बळी तेने कपटथी पकडीने मारी पासे लई आव्यो अने मारे तावे कराव्यो, जेना उपकारना बदलामां में बळीने एवुं वरदान आप्युं के तुं जे मांगे ते आपवा तैयार छुं. आथी बळीए सात दिवस माटे राज्य मांग्युं, जे में सत्यताने माटे आप्युं छे. आप सर्वे तरेहथी समर्थ छो, माटे हवे आपनी ध्यानमां आवे तेम करो. "

ए पछी विष्णुकुमार मुनिए पोतानुं वामनस्वरुप बनाव्युं अने ब्राह्मणनो वेश धारण कर्यो अने ज्यां बळीराजा दान करता हता, त्यां गया. बळीए आ ब्राह्मणनुं सन्मान कर्युं अने कहुं के आपनी जे ईच्छा होय, ते मांगी लो. जे मांगो ते दानमां आपवा तैयार छुं. ब्राह्मणे (मुनिराजे) कहुं "मने मात्र त्रण पगलां पृथ्वि आपो अने ते हुं मारा पोताना पगेथी मापीने लईश. जो आपवी होय तो हा कहो, नहि तो ना कहो. हुं एटलीज जग्यामां झुंपडी बांधीने रहीश. वधारेनी मने जरुर नथी."

बळीए कहुं—"हजु बीजुं पण कंई मांगो. जे मांगो ते आपवा तैयार छुं." ब्राह्मणे कहुं—"वधु कंई पण मारे जोइतुं नथी." ए पछी बळीए त्रण पगलां पृथ्वि आपवानो संकल्प कर्यो अने ब्राह्मणे 'स्वस्ति' कहीने तेनो सत्कार कर्यो. पछी ब्राह्मणे (मुनिए) विक्रियारुद्धिना प्रभावथी मोटुं शरीर धारण कर्युं अने एक पगलुं सुरगिरि पर्वत उपर मुक्युं अने बीजुं पगलुं मानुष्योत्तर पर्वत उपर मुक्युं अने त्रीजुं पगलुं भूमि माटे बळीने कहुं के हवे त्रीजुं पगलुं भूमि आप. बळीए कहुं के—हवे तो मारी पासे भूमि नथी, माटे त्रीजुं पगलुं मारी पीठ उपर मुको. हवे ब्राह्मणे (मुनिए) बळीनी पीठ उपर पग मूक्या, एटले बळी थरथर कंपवा लाग्यो अने सुरअसुरोनुं आसन कंपायमान थयुं अने अवधिज्ञानथी सर्वे बीना जाणवाथी नारद अने सुरअसुर देवताओ त्यां आव्या

अने ब्राह्मण (मुनि) ने नमस्कार करीने कह्युं-"हवे क्षमा करो, क्षमा करो." तेज वखते मुनिए खरुं रुप धारण कर्युं अने सर्वे ठेकाणे शांति प्रसरी रही अने वळीए यज्ञनो नाश कर्यो अने मुनिओने छुटा कर्या. आ वात ज्यारे पद्मरथ राजाना जाणवामां आवी, त्यारे तेओ त्यां आवीने मुनिनी पुजा, स्तुति, वंदना करवा लाग्या अने कह्युं-"हे मुनिराज, आजेज आपे धर्मरुपी जहाज डुबतुं बचाव्युं छे."

ए पछी सर्वे श्रावको पण त्यां आव्या अने जयजयकार थयो. आ प्रसंगे अत्रे ७०१ मुनिओनो उपसर्ग दूर थयो. राजाए कह्युं-"वळीने हवे घणी भारे शिक्षा करवी जोईए के जेथी फरीथी कोई आवुं अघोर कृत्य करे नहि. मुनिए राजाने क्षमाभाव राखवा जणावी कह्युं-"दया एज धर्मनुं मुळ छे अने हिंसा तथा क्रोध धर्मथी उलटां छे, माटे तमो हिंसा न करतां एना उपर क्षमाभाव करो. एणे (वळीए) जे पाप कर्युं, ते एज भोगवशे. जैन धर्म अहिंसामय छे अने बीजा धर्मो हिंसा-वाळा छे. जे धर्मने छोडीने हिंसा करे छे, ते मूर्ख माणस मरीने नर्कगतिमां जाय छे. हिंसामयी धर्ममां कुकर्मीओए एवा ग्रंथो लखेला छे के जेथी दूर्गतिज थाय छे.

आ सर्वे उपदेश बळी वगेरे चारे ब्राह्मणोए सांभळ्यो; जेथी तेओ विचारमां पडया अने मनमां पस्तावो करवा लाग्या के अरे ! आपणे घणुं मोटुं पाप कर्युं छे अने रातिदिन हिंसाने

करवावाळा धर्मने शरणे आपणे गया छीए ए खोटुं छे. जैन धर्मज सत्य धर्म छे. अमे पापीओए मुनिओने कष्ट आपीने घणुं पाप कर्युं छे. आ मुनिओए तो अमने बे वखते मृत्युमांथी छोडाव्या छे. जीवतांज अमोने आटलुं कष्ट पडयुं, तो हवे पछी तो अमारी गति केवी थाय ?

ए पछी वळी, नमुची, भृहस्पति अने प्रह्लाद, ए चारे ब्राह्मणोए मुनिने कह्युं—अमे जैन धर्म स्विकार करीए छीए, अमने श्रावकनां बारव्रत आपो. मुनिए श्रावकनां बार व्रतो संभळावीने आप्या, जे तेओए अंगीकार कर्या. ए पछी मुनिओ आहार लेवाने माटे नगरमां गया. दुर्गंधी धुमाडाथी मुनिओना कंठ बेसी गया हता, तेथी सर्वे श्रावकोए दुध वगेरेनी रसोई तैयार करी हती अने दरेक घेर श्रावको निग्रंथ मुनिने आहार माटे आववानी राह जोईने बेसी रह्या हता. सर्वे मुनिओ पधार्या अने विधि प्रमाणे आहार लीधो अने पछी वनमां चाल्या गया. भोजननो काळ वित्या पछी सर्वे श्रावको हर्षथी जम्या. आ दिवस श्रवण नक्षत्र अने श्रावण सुदी १५ नो दिवस हतो. ए दिवसे मुनिनी रक्षा थई, तेथी ए दिवस सर्वे प्रजाए पवित्र मान्यो अने तेनी निशानी याद राखवाने हाथे सुतरना दोरानुं चिन्ह बांध्युं. पछी दर वर्ष श्रावण सुदि १५ नो दिवस रक्षा बंधनना पवित्र दिवस तरीके मनावा लाग्यो (जे आज सुधी प्रचालित छे.)

ए पछी विष्णुकुमार मुनिए गुरुनी पासे जईने आलोचना करी अने छेदोपस्थापना विधिथी महान तप कर्युं.

आ प्रमाणे रक्षाबंधननी कथा सांभळीने श्रेणिक राजा घणा खुशी थया अनें तेमणे वात्सल्य अंग धारण कर्युं ।

इति रक्षाबंधन कथा संपूर्ण ।
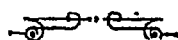
॥ अथ सलूना पूजन प्रारम्भः ॥

॥ प्रथम श्रीअकंपनाचार्य्यादि सप्तसै (७००) मुनि पूजा ॥

अडिल छंद—श्रीअकंपन मुनि आदि सब सातसै ॥ कर विहार हथनापुर आये सातसै ॥ तहां भयो उपसर्ग बड़ो दुःख-कार जू ॥ शांति भाव से सहन कियो मुनिराजजू ॥१॥ मिति जु पंद्रह सावन शुकल प्रमानियें ॥ ध्यानारूढ़ सुतिष्ठ सर्व मुनि मानियें ॥ हुओ उपसर्ग जु दूर धन्य घड़ी आजजी ॥ तिन प्रति शीस नवाय पूज मुनिराजजी ॥२॥ तिनकी पूजा रचूं भाव अरु भक्तिसे ॥ दिवस सलूना भयो इसी यह युक्तसे ॥ आह्वाननस्थापन सन्निधिकर्णजी ॥ तिष्ठ गुरू इतआय करूं पद सेवजी ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य्यादि सप्तशत् (७००) मुनिभ्यो अत्र अवतर २ संवौषट् इत्याह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः प्रति-स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधिकरणं ॥

अथाष्टकं । चाल जोगीरासा की ॥

शीतल प्रासुक उज्वल जल ले कंचन झारी लाउं ।
जन्म जरामृत नाश करन को तुमरे चर्ण चढ़ाउं ॥

श्री अकंपन गुरू आदिदे मुनि सप्तसै जानो ।
तिन की पूज रचूं सुखकारी भव भव के अघ हानो ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीअकंपनाचार्य्यादि सप्तशत् मुनिभ्यो नमः ॥ जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ॥ १ ॥

चंदन केशर मिश्रत करके नीको चंदन लाऊं ।
भव आताप जु दूर करनको गुरु के चर्ण चढ़ाऊं ॥
श्री अकंपन गुरु आदिदे मुनि सप्तसै जानों ।
तिन की पूज रचूं सुखकारी भव भव के अघहानों ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीअकंपनाचार्य्यादि सप्तशत् मुनिभ्यो नमः । भवआताप विनाशनाय चंदनं ॥ २ ॥

चंद किरनसम उज्ज्वल अक्षित भाव भक्ति से लीने ।
पुंज मनोहर श्री गुरु सन्मुख सरधा करजु करी ने ॥
श्री अकंपन गुरु आदिदे मुनि सप्तसै जानो ।
तिन की पूज रचूं सुखकारी भव २ के अघ हानों ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं श्रीअकंपनाचार्य्यादि सप्तशत् मुनिभ्यो नमः । अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं ॥ ३ ॥

बेल चंबेली श्री गुलाब के ताजे पुष्प सु लाऊं ।
काम बाण के नाश करनको श्री गुरु चर्ण चढ़ाऊं ॥
श्री अकंपन गुरु आदिदे मुनि सप्तसै जानो ।
तिन की पूज रचूं सुखकारी भव २ के अघ हानो ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्य्यादि सप्तशत् मुनिभ्यो नमः । कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं ॥ ४ ॥

गुंझां फेनी मोदक लाडू ताजे तुरत बनाऊं।
श्री गुरुवर के चर्ण जदा कर हर्ष हर्ष गुण गाऊं॥
श्री अकंपन गुरु आदिदे मुनि समसै जानो।
तिन की पूज रचूं सुखकारी भव २ के दुःख हानो ॥ ५॥
ॐ ह्रीं श्रीअकंपनाचार्यादि समशत् मुनिभ्यो नमः। क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ॥ ५ ॥

घृत कपूर की उत्तम जोतिसु स्वर्ण कटोरी धारूं।
श्री मुनिवर की करूं आरती मोह कर्म को जारूं॥
श्री अकंपन गुरु आदिदे मुने समसै जानो।
तिन की पूज रचूं सुखकारी भव २ के अघहानो॥ ६॥
ॐ ह्रीं श्रीअकंपनाचार्यादि समशत् मुनिभ्यो नमः। मोहांधकार विनाशनाय दीपं ॥ ६ ॥

धूप सुगंध सुवासित लेकर धूपायन में खेऊं।
अष्ट कर्म के नाश करन को आनन्द मंगल देऊं॥
श्री अकंपन गुरु आदिदे मुने समसै जानो।
तिनकी पूज रचूं सुखकारी भव २ के अघ हानो॥ ७॥
ॐ ह्रीं श्रीअकंपनाचार्यादि समशत मुनिभ्यो नमः। अष्टकर्मदहनाय धूपं ॥ ७ ॥

लौंग इलायची श्रीफल पिस्ता अरु बादाम मगाऊं।
सेव संतरा खट्टा मिट्ठा श्री गुरु चरण चढ़ाऊं॥
श्री अकंपन गुरु आदिदे मुनि सप्तसै जानो।

तिन की पूज रचूं सुखकारी भव २ के अघ हानो ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं श्रीअकंपनाचार्य्यादि सप्तशत् मुनिभ्यो नमः । मोक्ष-फल प्राप्ताय फलं ॥ ८ ॥

जल फल आठों द्रव्य मिलाकर भाव भक्ति से लाया ।
हे गुरु हम को भव से तारो ताते चरण चढ़ाया ॥
श्री अकंपन गुरु आदिदे मुनि सप्तसै जानो ।
तिन की पूज रचूं सुखकारी भव २ के अघ हानो ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं श्रीअकंपनाचार्य्यादि सप्तशत् मुनिभ्यो नमः । अनर्घ-फल प्राप्ताय अर्घं ॥ ९ ॥

अथ जयमाल ॥

दोहा—अकंपन मुनि आदि सब, सप्त सैंकड़ा जान ।
तिनकी यह जयमाल सुन, भाषा करूं बखान ॥ १ ॥

चोपाई—जीवदया पालें गुरूस्वामी । दें धर्म्मोपदेश बहु नामी ।
छहोंकाय की रक्षा पालें । तप कर आठ कर्मको टालें ॥ २ ॥
झुठ न रंच मात्र मुख बोलें । जो मन होय वचन सो खोलें ॥
महा सत्यव्रत के मुनि धारी । तिनके पायन धोक हमारी ॥३॥
तृण जल भी अदत्त नहीं लेवें । धन कंचन सब तृण समजेवें ॥
महा अचौर्य्य व्रत के गुरु धारी। तिन के पायन धोक हमारी ॥४॥
अठारह सहस शील के भेदा । निर्भय धारत हो सु अखेदा ॥
शील महाव्रत के मुनिधारी । तिनके पायन धोक हमारी ॥५॥
चौविस भेद परिग्रह गाये । सर्व त्याग बनवास कराये ॥

परिग्रह त्याग महाव्रत धारी । तिनके पायन धोक हमारी ॥६॥

पद्धड़ी छंद ।

सुभावत भावन बारह नित्त । विचारत धर्म्म सदा सुपवित्त ॥
जय ग्यारह अंग सु पढ़त पाठ । संसार भोगका त्याग ठाठ ॥७॥
पंचेन्द्रिय दमन करें महान । मन वचन काय कर शुद्ध ध्यान ॥
जय मुनिवर बंदू शांति चित्त । संसार देह भोगनि विरक्त ॥८॥
जय मौन धार मुनि तप करंत । तब कर्म काठ सबही जरंत ॥
जय आनंद कंद विधान रूप । जय ध्यावत गुरु आतम सरूप ॥९॥
संसार कष्ट काटो मुनिन्द । तुम चर्ण नमें सब देव इंद ॥
जय मुनिवर बंदू कर्म काट । शिव नारि वरन का करत ठाट॥१०॥
मैं अल्पमति अज्ञान बुद्ध । प्रभु क्षमा करो जो हो अशुद्ध ॥
रघुवर सुत, बंदत शीशनाथ । श्री गुरू के गुण गाये बनाय॥११॥
घत्ता—मुनि सब गुनधारं जगउपकारं कर भवपारं सुखकारं ।
कर कर्मजु नाशा आतमशासा सुख परकाशा दातारं ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं अकंपनादि सप्तशत् मुनिभ्यो महार्घं ।

दोहा—भक्ति भाव मन लाय, कर पूजे बांचे जांय ।
बाबूलाल सु स्वर्गपद, निश्चय ताको होय ॥

इत्याशीर्वादः । समाप्तेयंपूजा ॥
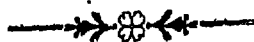
अथ श्रीविष्णुकुमार महा मुनि पूजा।

अडिल्ल छंद ॥ विष्णुकुमार महामुनि को ऋद्धी भई ॥ नाम विक्रिया तास सकल आनंद ठई । सो मुनि आये हथनापुर के वीच में । मुनि बचाये रक्षा कर वन वीच में ॥ १ ॥ तहां भयो आनंद सर्व जीवन घनो । जिम चिन्तामनि रत्न रंक पायो मनो । सब पुर जै जैकार शब्द उचरत भये । मुनि को देय आहार आप करते भये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार मुनिभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननं ।

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः प्रतिस्थापनं ॥

अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणं ॥

चाल—सोलहकारन पूजा की । अथाष्टकं ॥

गंगाजल सम उज्वल नीर । पूजों विष्णुकुमार सुधीर ॥ दया निध होय । जय जग बंधु दया निध होय । सप्त सैकड़ा मुनिवर जान । रक्षाकरी [1]विष्णु भगवान । दया निध होय । जय जग बंधु दया निध होय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीः विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ॥ १ ॥

मलियागिर चंदन शुभसार । पूजो श्री गुरुवर निर्धार ॥

---

१ विष्णु भगवान एटले श्रीविष्णुकुमार मुनि, एनो अर्थ बीजो कोइ न समजवो.

दयानिध होय । जय जगवंधु दयानिध होय ॥ सप्त सैंकड़ा मुनि-वर जान । रक्षा करी विष्णु भगवान । दयानिध होय । जय जगवंधु दयानिध होय ॥ ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः भव आताप विनाशनाय चंदनं ।

श्वेत अखंडित अक्षत लाय । पूजों श्रीमुनिवर के पाय । दया निध होय । जय जग वंधु दयानिध होय ॥ सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान ॥ रक्षा करी विष्णु भगवान । दया निध होय । जय जग वंधु दया निध होय ॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः अक्षयपदमाप्ताय अक्षतं ॥

कमल केतकी पुष्प चढ़ाय ॥ मेटो कामवाण दुखदाय । दयानिध होय । जय जग वंधु दयानिध होय ॥ सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान । रक्षा करी विष्णु भगवान । दया निध होय । जय जग वंधु दया निध होय ॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं॥

लाडू फेनी घेवर लाय । सब मोदक मुनि चर्ण चढ़ाय । दया निध होय। जय जगवंधु दयानिध होय॥ सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान। रक्षा करी विष्णु भगवान। दयानिध होय। जय जगवंधु दयानिधहोय।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनिभ्यो नमः क्षुधादिरोग विनाशनाय नैवेद्यं.

घृतकपूरका दीपक जोय। मोहतिमर सब जावै खोय। दयानिध होय जय जग वंधु दयानिध होय। सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान। रक्षा करी विष्णुभगवान। दया निध होय। जय जग वंध दया निध होय ।

ॐह्रींश्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः मोहांधकार विनाशनाय दीपं॥

अगर कपूर सुधूप बनाय ॥ जारें अष्ट कर्म दुखदाय । दया निधि होय । जय जगबंधु दयानिध होय । सप्त सैंकड़ा मुनि वर जान । रक्षा करी विष्णु भगवान दया निध होय । जय जग बंधु दया निध होय ॥

ॐह्रींश्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः अष्टकर्म्मविध्वंशनाय धूपं ॥

लोंग इलायची श्रीफल सार ॥ पूजों श्रीमुनि सुखदातार । दयानिध होय । जय जगबंधु दयानिध होय । सप्त सैंकड़ा मुनि वर जान॥ रक्षा करी विष्णु भगवान। दया निध होय। जय जग बंधु दयानिध होय ।

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्ताय फलं॥

जल फल आठों द्रव्य संजोय ॥ श्रीमुनिवर पद पूजों दोय ॥ दयानिध होय । जय जगबंधु दयानिध होय ॥ सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान ॥ रक्षा करी विष्णुभगवान दयानिध होय । जय जगबंधु दयानिध होय ॥

ॐ ह्री श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः अनर्घफलप्राप्ताय अर्घं।९।

अथ जयमाल

दोहा ॥ श्रावण सुदी सुपूर्णिमा । मुनिरक्षा दिन जान ॥
रक्षक विष्णुकुमारमुनि, तिन जयमाल बखान ॥१॥

चाल—छंद भुजंग प्रयात ॥

श्री विष्णु देवा करूं चर्ण सेवा । हरो जगकी बाधा सुनो

टेर देवा। गजपुर पधारे महा सुःख कारी॥ धरो रूप वामन
सु मन में विचारी ॥२॥ गये पास बलि के हुआ वो प्रसन्ना।
जो मांगो सो पावो दिया ये वचन्ना। मुनि तीन डंग मांगी
धरनी सु तापै॥ दई ताने ततक्षिन सुनहि ढील थापै॥ ३॥
कर विक्रिया मुनि सु काया बढ़ाई॥ जगह सारी लेली सुडंग
दो के मांही॥ धरी तीसरी डंग बली पीठमांही॥ सु मांगी
क्षमा तब बलीने बनाई ॥४॥ जलकी सु वृष्टि करी सुःखकारी॥
सरब अग्नि क्षण में भइ भस्मसारी। टरे सर्व उपसर्ग श्रीविष्णु-
जीसे। भई जै जैकारा सरब नम्रहींसे ॥ ५ ॥
चौपई॥ फिर राजा के हुक्म प्रमान। रक्षाबंधन बंधी सुजान॥
मुनिवर घर घर कियो विहार। श्रावक जन तिन दियो आहार॥६॥
जाघर मुनि नहिं आये कोय। निज दरवाजे चित्त सुलोय॥
स्थापन कर तिन दियो आहार। फिर सब भोजन कियो सम्हार॥७॥
तब से नाम सलूना सार। जैन धर्म्म का है त्योंहार॥
शुद्ध क्रिया कर मानो जीव। जासों धर्म्म बढै सु अतीव ॥८॥
धर्म्म पदारथ जग में सार। धर्म्म बिना झूठो संसार॥
सावन सुदि पूनम जब होय। यह दो पूजन कीजै लोय ॥९॥
सब भाइन को दो समझाय। रक्षाबंधन कथा सुनाय॥
मुनिका निज घर करो अकार। मुनि समान तिन देउ आहार॥१०॥
सब के रक्षाबंधन बान्ध। जैन मुनिन की रक्षा साधि॥
इस विधिसे मानो त्यौंहार। नाम सलूना है संसार॥ ११ ॥

पद्धड़ी छंद ॥

यह पूजन अभी रचे न कोय । यदि रचे तो मैं देखे न कोय ॥
यासे यह पूजन रचे सार । हो भूल चूक लीजो सम्हार ॥१२॥
श्री विष्णुगुरू के चर्ण दोय । "रघु सुत बाबू" वंदै संजोय ॥
"नगलै सरूप" वासी जुदास । मुनि चर्ण सेव की करत आस ॥१३॥

घत्ता ।

मुनि दीन दयाला सब दुख टाला आनंद माला सुखकारी ।
"रघु सुत" नित वंदै आनंद कंदै सुःख करन्दे हितकारी ॥१४॥

महार्घ ।

दोहा–विष्णु कुमार मुनी चरण, जो पूजे धर प्रीत ।
'रघु सुत' पावै स्वर्ग पद, लहै पुन्य नवनीत ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति श्री विष्णुकुमार महामुनि पूजा समाप्त ।
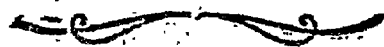
"दिगंबर जैन ग्रंथमाला" (सुरत) द्वारा प्रकट थएलां पुस्तको.
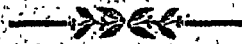
१–कलियुगनी कुळदेवी (गुजराती प्रत २०००) ०)०।।।
२–श्रुतपंचमी महात्म्य (श्रुत पूजा सहित १०००) ०)॥
३–धर्म परीक्षा (गुजराती भाषा पृ. २५० प्र. ११००) १)
४–सुदर्शन शेठ याने नमो कार मंत्रनो प्रभाव (प्र. १०००) ०।
५–सुकुमाल चारित्र (गुजराती भाषा. प्रत १०००) ०।॥
६–श्री पंचेंद्रीय संवाद (गुजराती प्र. १०००) ०)-॥
७–तमाकुनां दुष्परीणामो (गुजराती प्रत १०००) ०)-
८–सामायिक पाठ (विधि-अर्थ-आलोचना सह १५००) ०-॥
९–शीलसुंदरी रास (बालबोध लीपि. १३००) ०)॥
१०–सामायिक भाषा पाठ (अर्थ सहित ११००) ०)-
११–कलियुगकी कुलदेवी (हिंदी प्रत १००००) मु. सद्वर्तन
१२–भट्टारक–मीमांसा (गुजराती प्रत १२००) ०)॥
१३–प्राचीन दिगंबर-अर्वाचीन श्वेतांबर (प्रत ११००) ०)॥
१४–श्री पंचकल्याणक पाठ (अर्थ साथे प्रत २०००) ०)॥
१५–मनोरमा (गुजराती प्रत १३००) ०।॥
१६–श्री हनुमान चरित्र (हिंदी प्रत २०००) ०।॥
१७–श्री जीवंधर चरित्र (गुजराती प्रत १६००) ०॥
१८–शुं इश्वर जगत्कर्ता छे? (गुजराती प्रत २०००) अमुल्य.
१९–श्री जैन सिद्धांत प्रवेशिका (गुजराती प्र. १६००) ०।
२०–रक्षाबंधन कथा (पुजा सह. गुजराती प्रत १५००) ०)-॥